कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 5.905

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna
Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 8
Issue : 33
Jun. 2019-Sept.2020
www.pramanaresearchjournal.com

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

शोध-आलेखानुक्रम

सम्पादकीय
-आचार्य शीलक राम

कला और सौन्दर्य का सम्बन्ध
Dr. Sangram Singh 14-17

गोस्वामी तुलसीदास की लोकमंगल की भावना : आधार रामचरितमानस
डा० अरुण कुमार मिश्रा 18-20

सामाजिक न्याय और बिहार के विकास का प्रश्न : वर्तमान परिपेक्ष्य में
डा० उपेन्द्र प्रसाद 21-26

रामजीठाकुरप्रणीतकाव्येषु नारीभावना
अजित कुमार आचार्य 27-29

Future Education of Indian Woman: Ramkrishna Mission Girls school and the Ideas of Sister Nivedita
Dr.Sharmistha Routh 30-35

''अनुसूचित जाति के परिवारों के आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण तथा समायोजन पर उच्च शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''
डॉ० हरिकृष्ण 36-40

कम्बोडिया (कम्बुज) के साहित्य पर भारतीय प्रभाव
सविता 41-44

केदारनाथ सिंह के काव्य में आर्थिक विश्लेषण
डॉ० राजेश कुमार, रेखा रानी 45-48

A Proposal to Improve Software Process Quality by Categorization of Defects Using Clustering
Goldy, Dr. Pawan Kumar 49-53

An Effect of Dividend Policy on the value of Companies in India- An Empirical Study : To Study the Impact of Dividend Policy Determinants on Market Capitalization
Diksha Sharma, Dr. Rajiv Kumar Maheshwary 54-60

Child Marriage: A Violation of Human Right
Dr. Gopal Kaushik 61-64

नाटक : दृश्यकाव्य अथवा रूपक
पूजा सिंह 65-70

अंजु दुआ जैमिनी की कहानियों में टूटते जीवन-मूल्य
डॉ० राजेश कुमार, गीता देवी 71-74

आज की जरूरत - हिन्दी भाषा
डॉ० रवि वर्मा 75-77

आधुनिक हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श
संदीप कौर 78-80

Structuralism and Structuralist Literary Theory
Dr. Vandna Kaul 81-84

Pramāna
International Refereed
(Peer Reviewed)
Impact Factor : 5.905
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-33 (Jun. 2019-Sept.2020) (Page No. 78-80)

आधुनिक हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श

संदीप कौर
असिस्टैंट प्रोफेसर
गुरुनानक गर्ल्स कॉलेज
यमुनानगर (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

हिन्दी साहित्य में किसान जीवन के यथार्थ को समझने से पूर्व हमें हिन्दी साहित्य के अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को समझना होगा । आज औद्योगिकरण, शहरीकरण, बाजारवाद ओर भूमण्डलीकरण ने किसान जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है । हरित क्रांति के बाद मीडिया की उदासीनता ने साहित्य से किसान-चर्चा को बाहर कर दिया । भारत में आरंभ से ही संयुक्त परिवार की समृद्ध परम्परा रही है । पश्चिमी देशों अपेक्षा भारत में आज भी बेरोजगारों, कुंठितों तथा अभावग्रस्त व्यक्तियों का भरण-पोषण सरकार नहीं, बल्कि परिवार संस्था ही कर रही है । इसी नैतिक दबाव के कारण परिवार का कमाऊ सदस्य अपने हिस्से की जमीन परिवार के अन्य बेरोजगार सदस्यों के हवाले कर देता है । यही कारण है कि किसान यथार्थ की विभीषिका को कम करके दिखाया जाता है । हिन्दी साहित्य में किसान की स्थिति का वर्णन 'रामकथा' आरभ हो जाता है ।

मुख्य-शब्द : औद्योगिकरण, शहरीकरण, बाजारवाद, भूमण्डलीकरण, सामूहिक खेती ।

हिन्दी साहित्य में किसान जीवन के यथार्थ को समझने से पूर्व हमें हिन्दी साहित्य के अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को समझना होगा । आज औद्योगिकरण, शहरीकरण, बाजारवाद ओर भूमण्डलीकरण ने किसान जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है । हरित क्रांति के बाद मीडिया की उदासीनता ने साहित्य से किसान-चर्चा को बाहर कर दिया । भारत में आरंभ से ही संयुक्त परिवार की समृद्ध परम्परा रही है । पश्चिमी देशों अपेक्षा भारत में आज भी बेरोजगारों, कुंठितों तथा अभावग्रस्त व्यक्तियों का भरण-पोषण सरकार नही, बल्कि परिवार संस्था ही कर रही है । इसी नैतिक दबाव के कारण परिवार का कमाऊ सदस्य अपने हिस्से की जमीन परिवार के अन्य बेरोजगार सदस्यों के हवाले कर देता है । यही कारण है कि किसान यथार्थ की विभीषिका को कम करके दिखाया जाता है । हिन्दी साहित्य में किसान की स्थिति का वर्णन 'रामकथा' आरभ हो जाता है ।

हिन्दी साहित्य में किसानों की स्थिति का विश्लेषण तुलसीदास जी नहीं करते लेकिन उस बीच संस्कृति का निर्माण अवश्य करते हैं, जिस पर भारतीय किसान जीवन का पूरा अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र टिका हुआ है । रामकथा में कृषि के पारिवारिक विभाजन की मनाही है । रामकथा में परिवार को सामूहिक खेती करने का आग्रह किया गया है । "भूमि ही यहां सरकारी आय का प्रधान उद्गम बना दी गइ है । व्यापार श्रेणियों को यह सुभीता विदेशी व्यापार को फलता-फूलता रखने के लिए दिया गया था, जिससे उनकी दशा उन्नत होती आई और भूमि से संबंध रखने वाले सब वर्गो की क्या जमीदार, क्या किसान, क्या मजदूर-गिरती गई" ।

अब यह प्रश्न उठता है कि किसान की वास्तविक समस्या क्या । यहां हमें समझना होगा कि वह किसान जिसे बड़ा काश्तकार कहा जाता है वर्ष में एक फसल के बदले एक लाख से डेढ़ लाख तक की आय

से अधिक नही होती । यदि देखें तो यह आय सरकारी वेतन लेने वाले चपड़ासी या क्लर्क से भी कम है ।'

हिन्दी साहित्य लेखक प्रेमचन्द की कथा दृष्टि मूल रूप से किसान जीवन ही आधारित है । प्रेमचन्द का सम्पूर्ण कथा इतिहास प्रत्यक्ष रूप से इन्ही दो विषयों के इर्द-गिर्द चक्कर काटता है । प्रेमचन्द की परम्परा में साठ-सत्तर के दशक तक जो भी साहित्य लिखा जाता रहा है, उसमें भारतीय किसान के यथार्थ को किसी न किसी रूप में अवश्य पेश किया गया है । डॉ० राम विलास शर्मा के शब्दों में "हिन्दी में किसानों की समस्याओं पर ज्यादा उपन्यास लिखे ही नहीं गए, जो लिखे भी गए हैं, में प्रेमचन्द की सूझबूझ का अभाव है ।"[2]

इसी प्रकार द्विवेद्वी युग के कवियों द्वारा किसान जीवन के यथार्थ को लेकर लिखी गई कविताओं में गया प्रसाद शुक्ल स्नेही कृत 'दुखिया किसान', मैथिलीशरण गुप्त कृत 'कृषक कथा' आदि प्रसिद्ध है । कृषक क्रन्दन (स्नेही) तथा किसान (गुप्त) दोनों ही प्रबन्ध काव्यों के नायक किसान हैं । 'साकेत' के गीत

"मेरी ही पृथ्वी का पानी
ले-लेकर यह अंतरिक्ष
सखी, आज बना है दानी ।
मेरी ही धरती का धूम, बना आज आली,
घन धूम ।
गरज रहा आज-सा झुक-झूम,
ढाल रहा मदमानी ।
मेरी ही पृथ्वी का पानी ।"[3]

तत्पश्चात् छायावादी कवियों की रचनाओं में किसान का जीवन रूपायित हुआ है । छायावादी कवियों की कविताओं में किसान जीवन के यथार्थ का वर्णन मिलता है । महाकवि निराला की प्रसिद्ध कविता "बादल राग", में किसान और बादलों के सम्बन्ध को कुछ इस प्रकार से रूपायित किया गया है-

"जीर्ण, बाहु है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर ।"

"भारतीय जनता इतनी अज्ञानी, इतनी भोली-भाली थी कि शासन प्रणाली के दो मुहें कष्ट को वह समझ नहीं पा रही थी और सामाजिक बुराईयों तथा विदेशी शासक के दो पाटों के बीच बुरी तरह पिसती जा रही थी । भारत जैसे महान देश की सबसे बड़ी विडंबना यही थी कि देश की 80 प्रतिशत जनता, जिसने देश को बनाया था, शासन प्रणाली के द्वारा सबसे ज्यादा उपेक्षा का शिकार हो रही थी ।"[4]

हिन्दी कविता में प्रगतिवाद का स्वागत करने वाले सुमित्रानन्दन पंत की रचनाएं युगान्त, युगवाणी और ग्राम्या में अनेक ऐसी कविताएं है जिनमें किसान जीवन की उपस्थिति है। छायावादोतर कवियों में किसान जीवन पर लिखी कविताओं में भगवतीचरण वर्मा कृत ''भैसागाडी'' है । प्रस्तुत कविता में भैसागाड़ी का बिम्ब असुविधाओं और कठिनाइयों से भरे किसान-जीवन के रूप में दिखाया गया है । छायावादोतर कवियों में यदि किसी ने वास्तविक किसान-जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है तो वे प्रसिद्ध आलाचक एवं कवि डॉ० राम विलास शर्मा ही है । 'नागार्जुन' की अनेक रचनाओं में किसान जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत है । उनकी कविताओं में प्रकृति साहचर्य तथा साक्षात्कार का वह आनंद छिपा है जो केवल किसान मन में ही छिपा है । उनकी कविता फसल का कुछ अंश प्रस्तुत है -

"फसल क्या है ।"
और तो कुछ नहीं है

वही नदियों के पानी का जादू है ।
वह हाथों के स्पर्श की महिमा है ।"[5]

'मुक्तिबोध' की रचनाओं में किसान परिश्रम, जीवन संघर्ष के प्रतिनिधि नायक के रूप में मिलते है । प्रभाकर माचवे की 'गेहूं की सोच' कविता गेहूं की नियति के माध्यम से किसानों की दुर्दशा और मजबूरियों का चित्र प्रस्तुत करती है । "भवानीप्रसाद मिश्र" के लिए तो किसान ही धरती पर उल्लास और आनंद के स्वर्गिक संगीत का सर्जक है। इसी प्रकार केदारनाथ सिंह, विजयनारायण साही, ज्ञानेन्द्रपति, अरूण कमल, अलोक धन्वा आदि की रचनाओं में किसान जीवन के बिम्ब मिलते है । इस तरह से हम देखते है कि सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में किसान जीवन पर विचार-विमर्श किया गया है जो कि अत्यन्त सराहनीय कार्य है।

संदर्भ----------

1. आचार्य रामचन्द शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संवत् 2047 वि०, पृ० 292
2. रामविलास शर्मा, प्रेमचन्द और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृ० 44
3. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, सतसाहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली
4. डॉ० मीनाक्षी जयप्रकाश सिंह, प्रेमचन्द और किसान विमर्श, अपनी माटी, त्रैमासिक ई-पत्रिका, अंक-25 (अप्रैल-सितम्बर 2017)
5. नागार्जुन, फसल कविता, नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएं